घोषित किया, तीन हजार करोड़ रुपए का पैकेज़। लोगों को लगा कि अब ये आत्महत्याएँ बन्द होंगी, लेकिन ये बन्द नहीं हुईं। वहाँ सरकार और बाबू पूरा पैकेज खा गए। अब उसकी जाँच चल रही है।

सर, कल गुजरात दिवस भी था। गुजरात में कपास के किसान फल-फूल रहे हैं और महाराष्ट्र में आत्महत्या हो रही है, क्यों? क्योंकि, गुजरात में micro-irrigation है, चेक डैम है, खेती-तालाब है, उसको पानी मिलता है, जबकि महाराष्ट्र में उसे पानी नहीं मिलता और इसलिए महाराष्ट्र में आत्महत्याएँ हो रही हैं। वहाँ किसान कर्जे के ब्याज तले दब रहा है, इसका कोई विकल्प भी सरकार नहीं बता रही है। इसलिए, मैं माँग करता हूँ कि इनकी तुरन्त मदद की जाए। एक नया action plan घोषित किया जाए, एक comprehensive package दिया जाए। अगर यह हो जाए और सकरार प्रण कर ले कि अब आगे से एक भी आत्महत्या नहीं होगी, तो यह आत्महत्याओं का **...(समय की घंटी)...** दौर बन्द होगा और यही मेरी माँग है। **...(व्यवधान)...**

श्री अनिल माधव दवे (मध्य प्रदेश) : महोदय, मैं स्वयं को इस विषय से सम्बद्ध करता हूँ।

श्री नंद कुमार साय (छत्तीसगढ़) : महोदय, मैं स्वयं को इस विषय से सम्बद्ध करता हूँ।

Boat Mishap in Brahmaputra River Near Medartary in Dhubri District of Assam

SHRI BIRENDRA PRASAD BAISHYA (Assam) : Sir, I stand here to make a mention of the tragic ferry accident that occurred in Assam, in which more than 300 people are feared to have died. This tragic ferry accident occurred when a boat carrying more than 400 people capsized in the River Bhramaputra in Dhubri district of Assam.

Sir, there were more than 400 people travelling in the ferry while only 350 tickets had been sold. Many people were travelling without tickets. Also, there were children travelling with their parents. Although rescue operation is going on, more than 300 people are still missing. So, it is feared that more than 300 people have died in this tragic incident.

This is the most tragic accident happened in my State. Sir, hundreds of indigenous boats or ferries run daily in the Brahmaputra River and other tributaries of the Brahmaputra River. There is no road communication; there is no bridge. Water transport is the only option there. In between Nimatighat in Jorhat to Majuli, Dhola to Sadiya and in Dhubri and even in between Guwahati to North Guwahati, hundreds of indigenous boats or ferries run daily without any safety measures. There are no life jackets in those boats. To modernize these boats or ferries is the call of the hour. It is the duty of the Indian Government to come forward to help the State of Assam in this crucial juncture. Assam does not have enough financial resources to solve this problem. The Government of India is having an ambitious plan for urban transportation by providing the bus service. Similarly, water transport scheme should be started by the Government of India to prevent this type of situation. If the Government of India does not come to help us, you can't avoid such type of incident in our State. To prevent this type of tragic incident in our State, it is my request that the Government of India should come

[SHRI BIRENDRA PRASAD BAISHYA]

forward and announce a proper financial package for Assam and other parts of the country. I want a statement from the hon. Minister in this regard.

SHRI K.N. BALAGOPAL (Kerala) : Sir, I associate myself with the matter raised by the hon. Member.

DR. BHARATKUMAR RAUT (Maharashtra) : Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI SUKHENDU SEKHAR ROY (West Bengal) : Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

Serious Drought Situation in Maharashtra

श्री संजय राउत (महाराष्ट्र) : सर, महाराष्ट्र अब तक के सबसे भयानक सूखे से जूझ रहा है। महाराष्ट्र में परिस्थिति बहुत ही गंभीर है और मैं आपके माध्यम से इस विषय पर सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। सर, कांग्रेस के महासचिव चार दिन पहले महाराष्ट्र के सूखाग्रस्त इलाके के दौरे पर गए थे। वे सतारा district में गए, लेकिन यह एक political tourism था। लोगों को उस पर्यटन से कुछ नहीं मिला, कुछ घोषणाएं जरूर हुई, लेकिन लोगों के हाथ कुछ नहीं लगा। जैसा कि अभी प्रकाश जावडेकर जी ने कहा कि सबसे ज्यादा आत्महत्या महाराष्ट्र में किसानों की होती है और पैकेज पर पैकेज के बाद भी किसान आत्महत्या कर रहे हैं।

2011 में ही 860 किसानों ने आत्महत्या की और यह पिछले चार साल में सबसे ज्यादा संख्या है। पिछले सप्ताह विदर्भ के यवतमाल में एक ही दिन में दो-तीन किसानों ने आत्महत्या की, जिनमें से एक था गजानन घोटेकर। मृतक गजानन घोटेकर ने अपने suicide note में स्पष्ट रूप से कांग्रेस और एनसीपी को वोट न देने की अपील की। सर, उसने लिखा है कि ये राजनीतिक पार्टियां किसानों की परवाह नहीं करती और ये देश को बर्बाद कर देंगी।

सर, व्यक्ति मरते समय कभी झूठ नहीं बोलता, इसलिए सरकार और इस सदन को गजानन की बात को गंभीरता से लेनी चाहिए। अब तो सूखे की मार से किसान जीने के लिए संघर्ष कर रहा है। स्थिति इतनी गंभीर है कि गांव-गांव में घर-घर में ऐसे हताश, निराश गजानन आत्महत्या कर सकते हैं।

सर, हालत बिगड़ती जा रही है। अभी गर्मी की शुरुआत ही हुई है और पानी देने वाली नदियां और तालाब सूख गए हैं। शुक्रवार को सरकारी स्तर पर यह बात मान ली गई है कि यह सूखा इतिहास का सबसे भयानक सूखा है। 1972 और 2003 के सूखे से कहीं ज्यादा भयानक सूखा इस बार महाराष्ट्र में है। सतारा, सांगली, शोलापुर, बीड, उस्मानाबाद, लातूर, अहमदनगर, नासिक, धूले और विदर्भ के बहुत से जिले सूखे से प्रभावित हैं। 1200 गांवों और लगभग 1600 बस्तियों में लोगों को अपनी प्यास बुझाने के लिए टैंकरों का प्रयोग करना पड़ रहा है और सामान्य आदमी इसकी चपेट में आया है।

सरकार और प्रशासन जो उपाय कर रहे हैं, उनकी गति बेहद धीमी है, यह हमने खुद दौरा करके देखा है। तालाब सूखे पड़े हैं, जानवरों को सूखा चारा खिलाना पड़ रहा है, पांच रुपए में एक हंडा पानी बिक रहा है। सरकार ने जो घोषणा की है, उसका 25 प्रतिशत भी जनता तक नहीं पहुंच रहा है। राज्य सरकार की व्यवस्था टूट गई है। **...(समय की घंटी)...** आपके माध्यम से मेरी मांग है कि माननीय प्रधान मंत्री जी को खुद कमान संभालनी चाहिए **...(व्यवधान)...** सूखे से प्रभावित महाराष्ट्र के किसानों के लिए दो हजार करोड़ रुपए के पैकेज की घोषणा करनी चाहिए। धन्यवाद।